निराला-निकेतन-पत्रिका

वेला

निनादय नवीनामये वाणि! वीणाम्।
मृदुं गाय गीतिं ललित-नीति-लीनाम्।।

मई - जून
2008

संरक्षिका
श्रीमती छाया देवी

संपादक
डॉ० विजयशंकर मिश्र

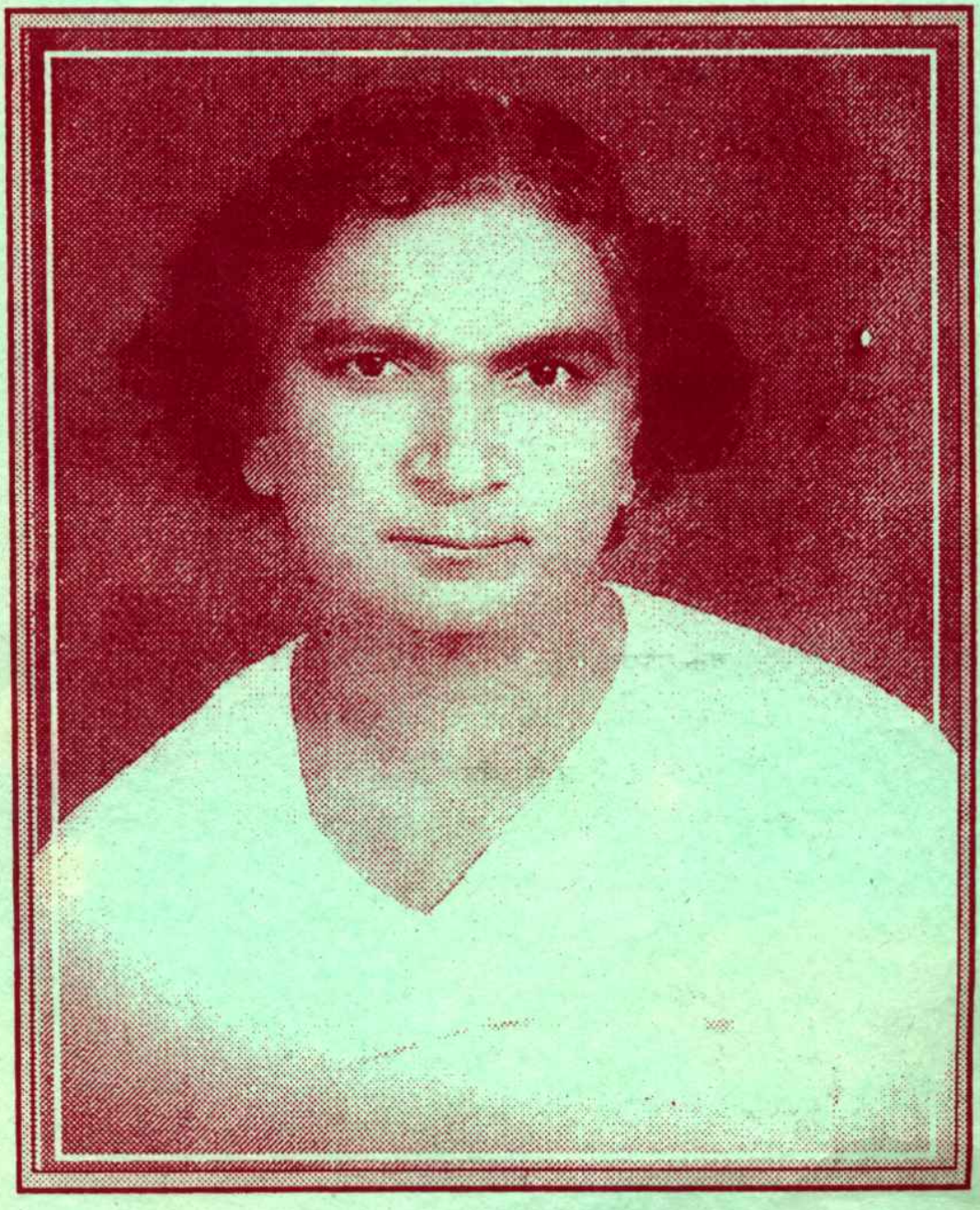

महाकवि आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

क्या दिया !

- आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री

दर्द दिया ही नहीं, दान फिर क्या दिया ?
सुख को यों तज दिया कि वह निःसार है,
किंशुक-कुसुमों की निर्गन्ध बहार है,
वह मादक चेतना नहीं कि खुमार है,
वह जीवन की जीत नहीं है, हार है,
साँस - साँस को बना बाँसुरी बाँस की, -
दर्द दिया ही नहीं, गान फिर क्या दिया ?
चाँद-सितारे जी भर मुझे निहार लें,
सप्त सिन्धु लहरों से मुझे पुकार लें,
वन-उपवन में पंछी मुझे भुला सकें,
पलक-पालने सपने मुझे झुला सकें,
भुज भर भेंट सकूँ मैं ठंडी छाँह को, -
दर्द दिया ही नहीं, प्राण फिर क्या दिया ?
जो छँटता जाता है, वह भी साथ है,
जो हटता जाता है, वह भी हाथ है,
साथ चल रहा, यह भी तो विश्वास है !
जो आगे आएगा, वह भी पास है !
जोड़ सकूँ मैं खण्ड-खण्ड को रश्मि से, -
दर्द दिया ही नहीं, ज्ञान फिर क्या दिया ?

सम्पादकीय :

आपके नाम

जीवन के उतार-चढ़ाव से गुजरते हुए जितना हो रहा है, मैं कर रहा हूँ। आप इससे संतुष्ट और प्रसन्न नहीं हैं। आपके भीतर लहर की तरह एक सहज कुलबुलाहट होगी कि मैं उतना क्यों नहीं कर पाता हूँ जितना आप चाहते हैं। आपकी आकांक्षा की पूर्ति करने में मैं सहज रूप में सक्षम नहीं हूँ। मन इन्द्रजाल में फँसा, तन तना-तना बात कैसे बने। विराट् की छाया में अपने भर उड़ने की कोशिश कम नहीं करता हूँ। उस पक्षी की उड़ान का क्या अर्थ जो थकान कम, टीस ज्यादा पैदा करती है। एक ऐसी टीस जिसका कोई उपचार नहीं होता।

खार खाता मेरा मन-विहग सपनों के आकाश में आँख उठाकर देखता है तो बहुत खुशी छलकती है लेकिन जब वक्त ढेला मारता है या गुलेल चलाता है तो जीवन की सारी धड़कनें रोने की बजाय हँसने लगती हैं। आखिर क्यों? मैं मौन हूँ क्योंकि प्रगति के पथ पर साथ निभानेवाला दुख जीवन-यात्रा का सर्वोच्च साथी होता है। मैं साहित्य का एक अनाड़ी साधक हूँ। मेरी साधना साधनहीन है, साहसहीन कदापि नहीं। कोई अफसोस नहीं कि मैं ठेस ज्यादा खाता हूँ। यह ठेस ठसक बनकर मचलते अरमानों से रू-ब-रू कराने में सार्थक भूमिका निभाती है इसलिए मैं हर विपदा को संपदा मानता हूँ। आपको यह बात आपत्तिजनक लगेगी फिर भी मैं विश्वस्त हूँ कि वह दिन दूर नहीं जब आप ही इसे स्वीकारेंगे और मेरी साधना को सराहेंगे। संवेदना किसी पथिक के लिए सबसे बड़ा पाथेय है। वेदना में तरल मिठास वही तो पैदा करती है।

- डॉ॰ विजयशंकर मिश्र

गजल

- डॉ॰ इन्दु सिन्हा

आदमी अब तो जहर बो रहा है
कल के वास्ते वह कहर बो रहा है।

बेखौफ राहों का तो पता था
पाँवों से वह पत्थर ढो रहा है।

कच्ची जमीं थी चमन भी था उजड़ा
चिनगारियों का शजर बो रहा है।

काटे परिन्दों के पर उसी ने
जो खंजर से खूनों का रंग धो रहा है।

देखा तो आँखें मेरी रोयीं 'इन्दु'
ख्वाबों में क्यों यह शहर सो रहा है।

मोबाईल : 09334905794

!! प्रतिष्ठित !! !! विश्वसनीय !! !! लोकप्रिय !!

मणिरत्नम अलंकार

आधुनिक फैन्सी आभूषणों के निर्माता एवं विक्रेता

हीरा मार्केट, गरीब स्थान रोड
मुजफ्फरपुर, बिहार - 842001

गीता नहीं गीत लिखता हूँ

- डॉ॰ अवधेश्वर अरुण

मैं साधारण जन का गायक, गीता नहीं, गीत लिखता हूँ।
टुटन-घुटन से भरी जिन्दगी
तार छिन्न सब साज पड़े हैं।
स्वार्थों के कटु कोलाहल से
रचना के स्वर मौन पड़े हैं।
जोड़-जोड़ टूटे तारों को मैं संगीत भरा करता हूँ ॥1॥
तम से आच्छादित कुछ जीवन
कुछ प्रकाश के मारे अंधे।
काल कोठरी में कुछ बैठे
करते रहते काले धंधे।
उनके जीवन की देहली पर लघु-लघु दीप धरा करता हूँ ॥2॥
कूड़ा चुनते बचपन बीते
मजदूरी में घिसे जवानी;
रोग-शोक में कटे बुढ़ापा
जिनकी दुःख से भरी कहानी,
उनके जीवन के दीपक में थोड़ा स्नेह भरा करता हूँ ॥3॥
चलते-चलते अटक गये जो
दिशाहीन हो भटक गये जो
दुःख चिन्ता कुंठा के मारे
शक्तिहीन निस्तेज बने जो
उनके क्लान्त मनों में अमृत अक्षर की ऊर्जा भरता हूँ ॥4॥

पाला पड़े कमल की भाँति
शोभाहीन उजाड़ बने जो
पर पीड़न पापाचारों से
संवेदन से शून्य बने जो
उनके मन का मानवता से मैं श्रृंगार किया करता हूँ ॥5॥
लाभ-लोभ की चिन्ताओं ने
बदली जीवन की परिभाषा
महलों की आकांक्षाओं ने
कुचली अपनापन की भाषा
ईंट-पत्थरों के अन्तर में मैं उर की धड़कन भरता हूँ ॥6॥
राष्ट्रभक्ति, संस्कृति, मानवता,
जग के मंगल की अभिलाषा,
ज्योतिर्मय-अभियान-चेतना
मेरी कविता की परिभाषा
इन्हीं की सिद्धि की खातिर मैं वाणी का तप करता हूँ ॥7॥
जो मराल लक्ष्मीवाहन का
करते हैं वंदन अभिनंदन
वंचक को महिमामंडित कर
छिड़का करते हैं नित चंदन
उन्हें सुबुद्धि मिले इस हेतु ईश्वर से अनुनय करता हूँ ॥8॥
जो कवि पूर्वज प्रतिभाशाली
पा न सके सम्मान अपेक्षित
राग-द्वेष की क्षुद्र चेतना
के कारण हो गये उपेक्षित
उनकी आत्मा की शान्ति हित अक्षर से तर्पण करता हूँ ॥9॥

तुमसे मिलना याद है

- डॉ॰ शिवदास पांडेय

खोया-खोया हर क्षण रहना, खोना-खोना याद है,
मिलना कुछ भी कभी न चाहे तुमसे मिलना याद है।

थोड़ा दिखना, थोड़ा छिपना सुख वह दूना याद है,
थोड़ा रुखड़ा, थोड़ा चिकना क्षण वह छूना याद है,
बरसों-बरस तरसना और बरसना प्यासी आँखों का,
दुनियाँ की आँखों से बचना तुमसे मिलना याद है।

कुछ कहने की हिम्मत करना, फिर चुप रहना याद है,
शशि-सा घन से बाहर क्षण, फिर अन्दर होना याद है,
कितना कठिन प्यार सहना है होना चाहे आसाँ हो,
बाहर क्षणभर जीना, अन्दर-अन्दर मरना याद है।

मन का चुप-चुप कानों से गुपचुप बातें कुछ कह जाना
आँखो का शंकित हो जाना, कल-कल, छल-छल बह जाना
कैसा प्यार अजीब तुम्हारा दूर रहो या पास कभी
तनहाई, एकान्त क्षणों में पल-पल घिरना याद है।

तुम कह देती, नभ छू देता, कहती तो सागर तरता,
तुम कहती हो जाता मोहन तुम्हें रुक्मिणी-सा हरता,
जीवन के व्यूहों से लड़ना तेरे संग कुछ कठिन न था
तनहा लड़ना, तनहा भिड़ना, उठना-गिरना याद है।

खोया-खोया हर क्षण रहना, खोना-खोना याद है,
मिलना कुछ भी कभी न चाहे तुमसे मिलना याद है।

जीवन, प्रारब्ध, ज्योतिष व तंत्र

परामर्शः साधक आनन्द

योग, कुंडलिनी, तंत्र-परा, अपरा, वास्तु, रमल
हस्त, टैरो, अंक, वर्ण आदि

संपर्क :- जगदम्बा नगर, बैरिया, मुजफ्फरपुर।
दूरभाष : 09934489246/9334910064

गजल

- डॉ॰ मंजर एजाज

वो तो एक पत्थर था और पत्थर का पत्थर रह गया,
मोम तो मैं भी न था, कैसे पिघल कर रह गया।

नींद की लज्जत से जब महरूम आँखें हो गई
तर्जुमाने-शब शिकन आलूद बिस्तर रह गया,

बोझ वो कुछ और ही था जिसका होना था मुहाल,
ख्वाब के सीने पे जो ताबीर का सर रह गया।

इक जरा सी बात जो मानिन्दे-हर्फे-राज थी,
दफन क्या दिल में हुई सीने में खन्जर रह गया,

मसअले कितने थे जिन से जिन्दगी थी जेरे-बार,
फिर न जाने किस तरह से मैं सुबुकसर रह गया।

कोर चश्मों में बही ताबीर की दौलत तमाम,
मेरे हिस्से में फकत ख्वाबों का मंजर रह गया।

श्री मुकेश शर्मा

शर्मा केमेस्ट्री सेंटर

अखाड़ाघाट रोड, माई स्थान, लेनिन चौक, ब्रह्मपुरा तथा
माड़ीपुर(शिवशंकर पथ), मुजफ्फरपुर
Contact : 9431402250, 9852150015

ग्यारहवीं, बारहवीं तथा मेडिकल, इंजीनियरिंग की समुचित व्यवस्था

ग़ज़ल

- श्री अरुण बंकुल

बह रही है अविरल धारा उसे थामना मुश्किल है,
दामन सबका भींग रहा अब उसे बचाना मुश्किल है।

तुम जवां जोश में हो, टकरा जा शिलाखण्ड से,
बच जाएगी जां जमानें की, वरना सर भी उठाना मुश्किल है।

अरे मुसाफिरो ! अब और न अधिक तू जुल्म सहो -
आँधी-तूफां में चिराग भी आज जलाना मुश्किल है।

चारों ओर शोर और सबके सीने में इक आग है,
गर तुम अब भी जग न सके तो और जगाना मुश्किल है।

मौन धरे क्यों वो मानव, गरज-बरस ज्यों नभ में बादल,
अगर अब न बसी ये धरती, तो फिर बसाना मुश्किल है।

सावधान ! अरे वो वसन्त, रूप बदल हमें छलता तू,
आँखें खुल गई हैं देख, अब भाग निकलना मुश्किल है।

अरे पपीहे ! क्यों उदास तू ? तेरे पंख कहाँ हैं,
ग्रीष्म की उष्णता ले डूबी तुझे, अब उसे उगाना मुश्किल है।

अपनी टूटी खोली बेहतर राजमहल की चमकी से,
ये ईंट-ईंट की ज्वाला है, उसे बुझाना मुश्किल है।

हम सब यों ही एक रहें, फिर देखें दिल्ली दूर नहीं,
सब सपने होंगे सच, अब कुछ भी नहीं तो मुश्किल है।

नट और मैं

- श्री हेमन्त कुमार श्रीवास्तव

बांस पर तनी रस्सियों के
बीच झुलता हुआ नट
और दफ्तर से घर तक
की दूरी तय करता हुआ मैं
दोनों में कोई अन्तर नहीं है।

याचना की फैली चादर पर
गिरते हुए सिक्कों की आवाज
से चमकती नट की बीबी की आँखें
और मेरे थके बौखलाये कदमों
की आवाज को पहचानती
मेरी पत्नी की आँखें
दोनों में कोई अन्तर नहीं है।

पेट पर हथेलियों से थाप मारता हुआ
नट का बेटा और
अपनी बाल सुलभ इच्छाओं से गाल
पर तमाचे सहता हुआ मेरा बेटा
दोनों में कोई अन्तर नहीं है।

अन्तर है तो सिर्फ इतना
इस खेल में नट के पांव जमे हैं
और मेरे कांप रहे हैं।

बीते दिन

- डॉ॰ पुष्पा गुप्ता

घर के मुहाने पर बैठकर
टुकुर-टुकुर ताक रहा
मृगछौना सा मोहना
याद कर रहा है-
पिछले बरस की होली
जब अपने मालिक के घर
उड़ाया था रंग-गुलाल
खेली थी होली
खाए थे पूए-मालपूए
पकौड़े, दहीबड़े और
न जाने क्या-क्या ?
उसकी जिह्वा पर अभी भी
रखा है - उन दिनों का
अविस्मरणीय स्वाद।
धैर्य और संतोष का पुल
बाँधने से भी नहीं बँधता
आखिर ! वह बच्चा है,
सरकारी दहशत ने, सबके
उड़ा दिए हैं प्राण,
अब कौन पूछेगा उन्हें ?
कौन देगा अन्न के दाने ?
खिचड़ी खाते-खाते
सूख गयी है जीभ
मुरझा गया है मन
सूख गया है तन
इससे तो अच्छा था
मालिक का वह घर
जहाँ तोशक तकिया पर
होता था सोना
मच्छड़दानी लगाकर
पंखे के नीचे
हवा खाते रहना
पर सरकार ने तो सब कुछ
बदल दिया है
मालिक के बच्चे के संग-संग
खेलना, खाना, रहना
वे रंग-बिरंगे खिलौने
चलती-फिरती गाड़िया
रोती-हँसती गुड़ियाँ
कहाँ खो गए सब ?
मोहना सोचता है मन ही मन
मन-पाखी फिर से चाहता है उड़ना
उसी पुरानी हवेली में
जहाँ वह कभी रहता था

दो कविताएँ

- श्री संतोष कुमार गुप्ता

मुझे ज्ञात है

नास्तिक होना परम है, यह परम के भीतर
ज्ञाता की सुगबुगाहट है
अपने भीतर अभी
घुटनों के बल है
थोड़े सहारे की जरूरत है
ज्योंही उंगली पकड़ाने वाला मिलता है
खड़ा हो जायेगा
डेगा-डेगी भरेगा
और बिना सहारे दौड़ेगा
दिख रहे नास्तिक पत्थर पे
छेनी हथौड़ी चलायेगा
खूबसूरत मूर्ति बनायेगा
पत्थर की मूरत में
करुणा पनपायेगा
मूर्ति बोल उठेगी
जिसे सिर्फ वही सुनेगा
नास्तिक अब नास्तिक नहीं
शत प्रतिशत है
नास्तिक को सदा से तलाश है
नास्तिक की
जिसे वह तराशे
और उस रसधार में
वह नहाये।

देखने वाले का देखना

मेरे देखने में
ख्वाहिश का कतरा भी मौजूद नहीं
यह
देखने वाले का देखना है
मेरा मय वजूद से बेवास्ता है
जो
बारीक से बारीक को भी
वहाँ तक भेदती है
जहाँ से वह जनमा है
मुझे तो बस इतना पता है
देखता हूँ मैं पर देखना मेरा नहीं
मैं सब झूठों की
चोर निगाहें पढ़ता हूँ ! कैसे ?
कैसे बताऊँ
मुझे खुद भी पता नहीं है
एक खाली मकां हूँ
जिसमें चारों पहर मौज ही मौज
तैरती है
जिसमें खाना- मैं बैठा लहराता है
तरन्नुम पैदा होती है
जो दिखाती है
वही देखता हूँ
देखने वाले मकान में
सारी साज-सज्जा मौजूद है
मेरे सिवा ।

गजल

- डॉ॰ शैल केजड़ीवाल

सफर जब हो लम्बा, गर कोई नहीं है
सारे जहाँ की कहते सच तो इक यही है

चल चला चल अकेला दुनिया की बात न कर
आया था जब अकेला संगी यहाँ नहीं है

हमसफर है ढूँढ़ता दुनिया जब सिमट गई है
वीराने हों या मयखाने दर्द की दवा नहीं है

फितरत उनकी यही है पीछे से वार करना
घबड़ाने की क्या जरूरत यह भी क्या सही है

सच पूछो उनसे जाकर सिला कैसा वे दे रहे
गम ही गम दिया है सच तो सिर्फ यही है

डूब गर जाए दिले-दरिया नाकाबंदी न करना
क्या खूब सुझाई है मरने की जब घड़ी है

डूब कर देखें कहीं पार उतर जायेंगे
जमाने को जब तसल्ली रजामन्दी भी यही है

जीना जब भाता नहीं मरने से क्योंकर डरते
मरने की चाह वालो मकसद यह फिर सही है

तुमसे गर है जमाना जमाने को फिर दिखाना
जमाना है बचाना ख्वाब इक यही है।

बूढ़ा बरगद

- डॉ॰ एन॰ के॰ मिश्रा

वटवृक्ष वह पुराना
घनी छाया, पवन सुहाना
क्रीड़ारत बच्चे या वृद्ध या जवान
छाया में बैठे दूर हो थकान
चेहरे पर मुस्कान
पक्षियों के घोंसले
कलरव और चोंचले
शाम को चिड़ियों के बच्चों की चहक
माँ की चोंच से आकण्ठ भोज
प्यार और दुलार की महक
हरे, बड़े पत्ते
चिकनी विशाल शाखाएँ
फुदकतीं, दौड़तीं गिलहरियाँ
कैसे मन को लुभाएँ
लाल-लाल पकोहा
किसी की गेंद, किसी का भोजन
गोली, गुलेल से हो
भरपूर मनोरंजन
लटकते उस पादप के सोर
कहीं झूला बनाता किशोर
मिला-जुला शोर
सब आनन्द विभोर
शाम को सभी पक्षियों का मेला
दिन भर की कहानी सुनाने
की बेला
सुबह-सुबह कोयल की
मीठी सी कूक
बच्चों का चिढ़ाना

खिसियाता सलूक
चील का झपट्टा
हाथ से रोटी छीन जाना
कौआ व नीलकण्ठ का
उस चील को चिढ़ाना
गर्मी की तपिश को
खुद झेलता खड़ा
शीतलता दे सबको
दिल कितना बड़ा
जब बारिस का मौसम
सब भींग-भींग जाता;
घने पत्ते, तने बाजू
तब बन जाते छाता
घोर ठंडक पड़े या कँपकँपी वाला जाड़ा
पूस की हो रात या फिर माघ का पाला
घूरे को घेरे कहानी सुहानी
कभी राम, कभी कृष्ण
कभी गंगा का पानी
कभी बुझौअल, कभी चुटकी
कभी बड़की, कभी छुटकी
कभी भोर की पराती
कभी कानों में फुसकी
कभी आँखों में धुआँ
किसी के गले में खुश्की
वहीं पे कुत्ता, वहीं बिल्ली
वहीं तोता, वहीं कौआ;
वहीं दादा वहीं दादी
वहीं गोदी में बौआ

कभी पंचों की बैठक
कभी पथिक विश्रामशाला
कभी झपकी की थपकी
कभी यह व्यायामशाला
सृष्टि के सब खेल
इसने देखे, दिखाए
मगर आह ऐसे भी
दिन इसके आए
दे प्यार यह सभी को
सबको खुशियाँ ये बाँटे;
खुद सहता रहे गम और सदमों के चाँटे
शायद कर्मजाल में
काल के बवाल में
इसके दान और सम्मान को
महसूस न करें हम
पर जब यही न रहेगा
किसी आने वाले काल में
तब याद और मलाल बहुत देंगे
हमें गम
ओ खग उड़ के आ जा
ओ पथिक आ ठहर जा
ओ बन्धु आ मिलें हम
उस छाँह में चलें हम
करें याद उसकी मस्ती
जिस प्यार में पलें हम
दिल में उमड़ती श्रद्धा
करुणा का है वो सागर
छाया अजर है उसकी,
अमृत का है वो सागर
ये बरगद और भी बढ़ेगा
यह और दिन जिएगा
लेता न कुछ किसी से
आशीष ही मिलेगा
लेता न कुछ किसी से
आशीष ही मिलेगा।

NEW HARVEST-MOON
CHILDREN'S SCHOOL

(Nursery to Std. X)
C.B.S.E. CURRICULUM
NEW AREA SIKANDARPUR, MUZAFFARPUR
Tel. No. : 0621 - 2211021,
Mob. : 9835239935

दो कविताएँ

- श्री शशिकान्त सिंह 'शशि'

उदास है सूरज

उदास है सूरज
गिरने लगा है किरणों का
संवेदी सूचकांक
ठंडी पड़ने लगी है तपिश की मंडी
कल से प्रतिबंधित होगा वह
नहीं उगना है पूरब से
पश्चिम में उगे, पश्चिम में डूबे
चारों दिशायें पश्चिम ही होंगी
नहीं होगा पूरब का अस्तित्व
छपा है 'न्यूयार्क टाइम्स' में
मिट्टी, पानी, धूल, हवा
बंद होंगे शैतानी पंजे में
सहमी-सी चारों दिशायें
देख रही हैं सूरज का मुख
और उदास सूरज
खड़ा है; 'ह्वाइट हाउस' के सामने।

❋

वो बयान नहीं देंगे

वो बयान नहीं देंगे
न बकरे के पक्ष में
न कसाई के
कटना बकरे का धर्म है
काटना कसाई का कर्म है
धर्म-कर्म के मामले में
वो चुप रहते हैं
शरीफ आदमी हैं बयान नहीं देंगे
उन्हें बकरे के मरने का दुःख है
लिख लेंगे एक कविता
रख लेंगे बन्द कमरे में
एक-आध घंटे का मौन
छोड़ देंगे एक सप्ताह तक माँसाहार
उनकी भी मजबूरी समझिये
कसाई से उनकी क्या अदावत है ?
आज शाम उसी के घर
दावत है।

❋

सत्य की प्राप्ति के लिये काव्य और कलाएँ जिस सौंदर्य का सहारा लेते हैं जीवन की पूर्णतम अभिव्यक्ति पर आश्रित है, केवल बाह्य रूपरेखा पर नहीं।

-महादेवी

नई सुबह

- श्री श्रवण कुमार

सदियों से
व्यवस्था के मजबूत खम्भे से बँधी
पंक्तिबद्ध बैलों की जमात
आधी रात आते-आते
सोचने लगी -
कब तक दौनी करते रहेंगे
मालिक का गेहूँ
मुँह में जाबी लगाए
कब तक खाते रहेंगे
चाबुक की मार
थोड़ा भी सुस्ताने पर
तीसरा पहर होते-होते
पगहा तोड़ने की कोशिश में
जुट गये
दौनी में जुते
वे सारे बैल
चौथे पहर के उतरार्ध में
उन्होंने तोड़ ही डाली
व्यवस्था की मजबूत रस्सी
मालिक के झपटने पर
वे दौड़ने लगे
पूरब की ओर
जिधर सुबह सबेरे
क्षितिज पर
खिलखिला रहा है लाल सूरज
नहा रही है धरती
नई रोशनी से
कलरव कर रही है चिड़िया
नई सुबह होने पर

बेटी

- सुश्री मीनाक्षी 'मीनल' (पत्रकार)

बेटी के पास सींग नहीं है
भैंस के पास है
जिसे चारा खिलाता हूँ
गोबर उठाता हूँ
फिर भी, चला देती है दुलत्ती
बेटी, दुलत्ती खाए जख्म पर
लगा देती है मरहम

बेटी नहीं दौड़ती तेज
मोटरसाइकिल की तरह
मैं मोटरसाइकिल पर
हवा से बातें करता
जल्द ही पहुँच जाता हूँ घर
जहाँ इंतजार में
रोटी के साथ
होती है बेटी

बेटी नहीं बदलती रूप
रूप बदल रहा है
चैनलों की संगत पाकर
टेलीविजन
जिसे देखता हूँ मैं
चैनल बदल-बदल कर
बस कीजिए पापा
आँखें खराब हो जायेंगी
कहती है बेटी

बस, नहीं कहती बेटी
नये घर में
भैंस न मिलने पर
खाती है दुलत्ती

मोटरसाइकिल न मिलने पर
बिना ईंधन के ही
घसीटा जाता है
उसकी देह की इंजन को

टेलीविजन न होने पर
देखती है वह
घरवालों का वीभत्स रूप
जिसे वह दिखाते हैं
अश्लील चैनलों की भाँति
निर्भीक होकर

और बेटी,
भैंस के चारे की तरह
मोटरसाइकिल के पेट्रोल की तरह
खपत होते-होते
एक दिन

ओढ़ लेती है
केरोसिन का घूंघट
पहन लेती है,
अस्थियों का गहना
सजा लेती है
राख से मांग

अंततः दहेज की डोली में
हो सवार
टेलीविजन की सूर्खियों में
उभर आती है।

आज का आदमी

- श्री देवेन्द्र प्रसाद सिंह

भुतहा जंगल के प्रेत-भवन के सभागार में भूत, प्रेत, चुड़ैल, शैतान तथा इनकी उप जातियों की मिटिंग चल रही थी। विषय था, क्या पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं भी मनुष्य नामक जीव है या यह मात्र भ्रम या वहम है। भूत, प्रेत के बच्चों को डराने के लिए मनुष्य शब्द का भिन्न-भिन्न तरह से प्रयोग करने की परम्परा है।

ज्ञानी बुजुर्ग प्रेतों का कहना था कि मनुष्य नाम का जीव काल्पनिक है और डराने-धमकाने के काम में प्रयोग किया जाता है। मूल धार्मिक ग्रंथों का भी अवलोकन किया गया। उसमें स्वार्थी देवों का वर्णन तो मिला लेकिन मनुष्य नामक जीव का अस्तित्व नहीं बताया गया। धर्म-ग्रंथ के उत्तर खण्ड में एक जगह आया है कि जब कोई जीव अत्यन्त निकृष्ट कार्य करेंगे तो उनका अवमूल्यन होकर घनघोर पापी जीव में जन्म होगा। जीव का नाम नहीं बताया गया किन्तु लक्षण बताये गये हैं। उस जीव के लक्षण होंगे कि वह अत्याचारी होगा, कृतघ्न होगा, दुराचारी होगा, धोखेबाज होगा, हत्यारा होगा और क्षण-क्षण अपना रूप बदलेगा लेकिन अभी तक ऐसा जीव पैदा हुआ है या नहीं, यह खोज का विषय है। यदि कहीं मिल जाता है तो वही मनुष्य होगा।

❋

मैं प्राणियों के विकास में स्त्री के पद को पुरुषों के पद से श्रेष्ठ समझता हूँ, उसी तरह जैसे प्रेम, त्याग और श्रद्धा को हिंसा और संग्राम तथा कलह से श्रेष्ठ समझता हूँ। अगर हमारी देवियाँ सृष्टि और पालन के देव-मंदिर से हिंसा और कलह के दानव-क्षेत्र में आना चाहती हैं तो उससे समाज का कल्याण न होगा। मैं इस विषय में दृढ़ हूँ।

'गोदान' : प्रेमचंद, पृष्ठ संख्या 146

सुनामी लहर

- श्रीमती उषा किरण

इस सुनामी लहर का कहर देखिए।
कैसे बिखड़ा पड़ा है शहर देखिए॥

इसने धोखा दिया है छलावा किया,
इस समन्दर की लहरों ने मन हर लिया
इसमें कितना भरा है जहर देखिए,
इसने सपनों को तोड़ा शहर देखिए।

इस सुनामी लहर का कहर देखिए।
कैसे बिखड़ा पड़ा है शहर देखिए॥

यहाँ बचपन उछलती है लहरों के संग,
कैसा अद्‌भुत बिखेड़ा प्रकृति ने रंग,
मौज-मस्ती में डूबा चमन देखिए,
खुश हुआ आज धरती गगन देखिए।

इस सुनामी लहर का कहर देखिए।
कैसे बिखड़ा पड़ा है शहर देखिए॥

कल ही शहनाइयाँ बज रही थी यहाँ,
रश्मि दुल्हन बनी थी सजी थी यहाँ
आज मातम भरा ये महल देखिए,
टूटती चूड़ियाँ हर-एक पल देखिए।

इस सुनामी लहर का कहर देखिए।
कैसे बिखड़ा पड़ा है शहर देखिए॥

गूँजती थीं यहाँ रोज किलकारियाँ,
मनती थीं जहाँ जश्ने-खुशहालियाँ,
माँ का हृदय विदारक रुदन देखिए,
कितने सपने हुए हैं दफन देखिए।

इस सुनामी लहर का कहर देखिए।
कैसे बिखड़ा पड़ा है शहर देखिए॥

मुझको तो बहते जाना है

- डॉ॰ अरुण कुमार 'सज्जन'

उत्तल समतल डगमग मग
भूधर कीचड़ पंकिल तल
हर कंटीली राह बंधुवर
झरने की अविरल धार बन
मुझको तो बहते जाना है।

चट्टानों ने मुझको कब रोका
हर गह्वर से उसने पथ छोड़ा
कदम-कदम अंगार बिछी हो
तब भी उन पर चढ़ते जाना है।
मुझको तो बहते जाना है।

नहीं ठहरती रात अंधेरी
सूरज हर दिन निकला करता
चलें बंधुवर पथ है लंबा
करतब अपना करते जाना है
मुझको तो बहते जाना है।

नहीं रुका है कदम किसी का
द्वेष-दंश मनमानी से
ऊपर भगवन नीचे तू है
शेष सभी छुटते जाना है
मुझको तो बहते जाना है।

अर्चना साड़ी शो रूम
कल्याणी, मुजफ्फरपुर
दूरभाष :- 0621-2245556
सभी प्रकार की साड़ियों के एक मात्र विश्वसनीय एवं प्रतिष्ठित संस्थान

जिंदगी बदरंग है

- डॉ॰ देवव्रत 'अकेला'

क्यूँ न हो, बदरंग भला
हर जगह जंग ही जंग है
सुत मित नारी की परिभाषा
बस लगती है झूठी दिलासा
सबकी भृकुटी तनी हुई है
सब कर रहे हैं छलावा
न भरत सा भाई है
न कोई सीता व सावित्री
सभी के हाथों खंजर है
सभी कर रहे हैं एक तमाशा
जो शठ है, दीन एलाहि पुकार रहा
कैसे करे वह रक्षा अपनी
सोच-सोच घबड़ा रहा
सभी घेर रहे हैं उसे चक्रव्यूह में
कहाँ जाये, सोच-सोच घबड़ा रहा
माथे पर तबला बजा रहा
घर में दारा की झिड़की
ऑफिस में हाकिम की घुड़की
बेटा नाक फुला-फुला दे रहा धमकी
बेटी उपालंभ लिये
चाहती करना अपने मन की
नींद भी नहीं आती
भाँग अफीम की गोली भी
लगती है बन्दूक की गोली सी
मर-मर कर जीना है
जख्मों को यूँ ही सीना है।
पूछने वाला है कहाँ कोई
सिर्फ रोना ही रोना है
पर मन एक बार फिर कहता है
आनेवाला मदमस्त वसंत है
सब बदरंग होंगे रंगीन
सभी रंगेंगे अपने-अपने रंग में
अरि से भी होगी प्रीत
और खतम होगी जंग
प्रेम का बहेगा नीर

जिल्द

- डॉ॰ फूलगेन पूर्वे

किताब की सुन्दरता बढ़ाने वाली
अपनी सुन्दरता लुटा देती हो
तुम्हारा जीवन समाप्त होता है
सिर्फ किताब की सुन्दरता बढ़ाने में
कोई स्याही गिराता है तुम्हारे ऊपर
अपना नाम भी लिखता है
किताब का नाम भी लिखा जाता है
पी-एच॰डी॰ की उपाधि भी प्राप्त करती है
तुम्हारे अन्दर कोई रुपया चुराता है
गुप्त पत्र भी छुपाकर रखता है
फोटो को सँवारकर रखती हो
किताब की जिन्दगी बढ़ाती हो
तुम्हारी जिन्दगी खत्म होती है
कोई नहीं पूछता है तुम्हें
तुम्हें डाल दिया जाता है गड्ढ़े में
चूल्हे का जलावन भी बन जाती हो
मरते-मरते तक उपकार करती हो
तुम्हारी जिन्दगी उपकार में खत्म होती है
तुम्हें चाहते हैं सभी लोग
हर किताब के ऊपर तुम रहती हो
तुम्हारा वास सभी जगह है
राष्ट्रपति कार्यालय से लेकर
टूटी हुई झोपड़ी में भी
तुम्हारा काम है इज्जत की रक्षा
तुम्हारी पूछ हर जगह होती है
मानव की बेरोजगारी की समस्या हल करती हो
कुछ लोग जिल्दसाजी पर ही जीते हैं
तुम्हारी नकल अगर सब लोग करें
तो दुनिया सुखमय बन सकती है।

आओ चलें निराला-निकेतन

– डॉ॰ सिन्धु बाला

जब तलक हैं शास्त्री जी इस धरती पर
सच ही सच ज्यादा है झूठ कम है
शास्त्री जी के भक्त बन कर देखो होगी तरक्की
हिन्दी साहित्य 'गीत' का महास्वाद मिल जाएगा
जब तक जानकीवल्लभ शास्त्री जी नाम के दीपक हमारे साथ हैं
लाख मुश्किल होगी हम नहीं डरेंगे खुशी-शान्ति का दीप जलेगा
अक्षर रूपी दीप से उज्ज्वल किया हिन्दुस्तान
मेरी विनती है इनके पक्ष में सोचे सरकार
शब्दों की धार कितनी सजीव है गूँज उठता है तल-अतल
वेद, पुराण, रामायण जैसा साहित्य गीत है महाकवि का
माँ छाया जी सभी वातावरण में अपना फर्ज निभाती हैं
मुसीबतों में भी स्थिर होकर मीरा बन मुस्काती हैं
शास्त्री जी अनमोल मणि सबकी आँखों के तारे हैं
याद करने पर दौड़ने लगता है मन, बीती बातें सब सामने आती हैं
शान्ति का संसार खोजते हर वर्ष लौट आते हैं सभी
अमृत महोत्सव में लोगों की संख्या अधिक होती है
कोई भी कला प्रेमी शास्त्री जी के रहते अकेले नहीं है
अकेले शास्त्री जी हम सब की रक्षा करेंगे ज्ञान प्रकाश फैला के
तल-अतल में शास्त्री जी का जब तक गीत-गजल गूँजेगा
चहुँ दिशा विकसित होगी साहित्य को भी आकाश मिलेगा।

अंबर

बॉम्बे डाईंग एक्सक्लूसिव शो रूम

कल्याणी, मुजफ्फरपुर

बेडसीट, तौलिया, पैंट-सर्ट, कंबल आदि के लिए पधारें

– मणिशंकर कुमार उर्फ 'मन्नु'

गुरु–कृपा

धन्य हो धन्य गुरु देव जी जीवन दिया सुधार।
नाम लखाया आपना किया बड़ा उपकार॥
किया बड़ा उपकार धार भाव पकड़े बाँही।
नाम जहाज बिठाय डुबौं भव में अब नाहीं॥
नाम जी अक्षर एक है 'दर्शन' कहा पुकार।
धन्य हो धन्य गुरु देव जी जीवन दिया सुधार॥

❋

(दो)

दया धर्म का मूल है

मुख में राम बगल में छुरी बड़ी भयंकर भूल है।
सब धर्मों ने यही कहा है दया धर्म का मूल है॥

दया और करुणा के ही तो सहयोगी ये प्यार है,
इन्हीं मृदु भावों से हर्षित होता यह संसार है।
काम, क्रोध और लोभ-मोह तो देते हरदम शूल हैं।
सब कवियों ने यही कहा है, दया धर्म का मूल है।
उजड़ गई जिनकी आँखों के सपनों की फुलवारी,
आँखों के जल से सिंचित कर, महका दे वह क्यारी।

यही धर्म और कर्म है, सब शास्त्रों के अनुकूल है।
सबने सोचा, यही कहा है, दया धर्म का मूल है

❋

आशा और विश्वास की जीवित मूर्ति 'आर्यरत्न' पन्नालाल आर्य

- श्री कमलेश दिव्यदर्शी

इन्सान आता है चला जाता है। कुछ विरले लोग होते हैं जिन्हें देखकर, यादकर, पढ़कर या सोचकर जीवन आशा और विश्वास से भर जाता है। मुरझाये जीवन में जीवन की तमन्ना जीवंत हो जाती है। संसार और सांसारिकता के बीच अनासक्त और निर्लिप्त जीवन कर्मयोगी की जिम्मेदारियों से जुड़ा दिखाई देता है। दायित्व बोध जिनके लिए परम धर्म हो एवं कर्त्तव्य के लिए कोई कोर-कसर छोड़ना जिनके स्वभाव में नहीं हो ऐसे व्यक्तित्ववानों से ही यह वसुन्धरा वैभवमय है।

82 वर्ष के वय को पार करने के बाद भी युवा से ज्यादा सक्रिय, प्रसादचित्त, प्रेमपूर्ण, आह्लाद, उल्लास, उमंग, उत्साह के साथ निष्ठावान जीवन के मिशाल के रूप में आर्य समाज मुजफ्फरपुर की फुलवारी को सुरभित करनेवाला सिरमौर व्यक्तित्व आज प्रायः शहर के अधिकांश प्रगतिशील संगठनों के सम्मानीय पदाधिकारी के पद पर प्रतिष्ठित है।

महाकवि आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री जी इनके बारे में कहते हैं 'शुद्ध सेवा भाव से समाज के साथ खड़े होने वाले विरले लोगों में पन्नालाल आर्य जी एक हैं।'

प्रख्यात कवि राजेन्द्र प्रसाद सिंह का कथन है 'सबके स्वजन पन्ना बाबू मेरे भी आत्मीय बन्धु हैं। आज के जमाने में अगर किसी के स्वभाव, व्यवहार और बोल-चाल के बारे में कोई शिकायत करने का कारण न मिले, तो यह उसे अलभ्य व्यक्तित्व का स्वामी और मिलनेवाले के लिए सौभाग्य का प्रमाण है।'

विशारद व्यक्तित्व डॉ॰ सुरेन्द्रनाथ दीक्षित उदारचेता आर्यरत्न के बारे में लिखते हैं - 'पूरे समाज की तमन्नाओं के साथ जीने-मरने की, भेद-भाव से बहुत ऊपर उठकर सबके साथ जुड़ जाने की, लोकहित साधन की, चेतना के उदात्त चिंतन की भावना को प्रश्रय देने के आग्रह के साथ पूरे समाज में एकता की तलाश के लिए हर कदम पर हर क्षण वे साधनारत रहते हैं।'

सांस्कृतिक जीवन मूल्य रक्षक डॉ॰ अवधेश्वर अरुण मुजफ्फरपुर के भामाशाह के रूप में इंगित करते हुए लिखते हैं कि मुजफ्फरपुर की धरती धन्य है जिसे पन्ना लाल जी को पैदा करने का गौरव प्राप्त हुआ। धन तो बहुतों के पास है लेकिन उसका सृजनात्मक उपयोग करने की उदारता विरले लोगों में है। पन्ना लाल जी उस निर्झर की तरह हैं जिसका शीतल जल निरन्तर झरता हुआ जरूरतमंद को तृप्त करता है।

शहर के साहित्य को सजानेवाले इमेरिट्स प्रो॰ डॉ॰ महेन्द्र मधुकर उनके बारे में लिखते हैं कि वे ऐसे सरल आम आदमी हैं कि सबों को ऐसा लगता है कि

यह तो मेरा ही प्रतिरूप है, जो मैं हूँ वही यह आदमी है। यही तादात्म्य इनके व्यक्तित्व को आकर्षक, चुम्बकीय और सरल बना देता है। वे सीधे लोगों के मन में प्रवेश करते हैं और दुःखी व्यक्तियों को लगता है जैसे किसी ने दर्द की जगह रूई का फाहा रख दिया हो।

वर्त्तमान कुलपति, दार्शनिक और साहित्यकार डॉ॰ रिपुसूदन श्रीवास्तव अपने बेवाक विचार में बोलते हैं कि सादगी और मानवता की प्रतिमूर्ति पन्ना लाल जी जैसे सच्चे और स्नेहिल व्यक्तित्व के लोग जब तक इस पृथ्वी पर हैं, तब तक बंधुत्व और मानवता नहीं मिट सकती।

आर्यरत्न का साधुचरित सदैव हम देखते हैं कर्म के आवर्त्त तथा उन्माद के बीच में। गुफा न इनके नसीब में है, न इनकी चाहत है। इसी संसार के लिए कुछ अच्छा कर गुजरना इनकी भावना भी है और नियति भी। ये निरन्तर तपोमय जीवन तथा क्रिया-कलाप में संलग्न रहते हैं।

सबसे बड़ी बात जो इनके जीवन में मिलती है वह है जीवन-मूल्य के प्रति अहर्निश सजग तथा छोटी से छोटी चीज जिसपर आम आदमी असावधान होता है वहीं वे उन पर इतने गम्भीर तथा सदुपयोग करने की चेष्टा में होते हैं जो आश्चर्य में डाल देता है। यही वो कारण है कि उम्र की इस वयोवृद्ध दशा में भी युवावस्था की प्रफुल्लता तथा सुन्दर यौवनावस्था के सुरूप की सुन्दर झलक सतत् इनके ज्योतिर्मय जीवन में मिलती है।

आम आदमी भी उतनी ही आसानी तथा स्नेह के साथ इनके साथ हो पाता है जितना कि असाधारण तथा अनोखा व्यक्तित्व। इनका समदर्शी तथा प्रियदर्शी व्यक्तित्व तथा जीवन ही है कि आर्य समाज मुजफ्फरपुर के पिछले 24 निर्वाचनों में निर्विरोध सर्वसम्मति से प्रधान पद पर निर्वाचित होते आये हैं। 13 वर्ष की छोटी उम्र में इनका सम्बन्ध आर्य कुमार के रूप में आर्य समाज से हुआ और फिर पूरे रूप में आर्योचित जीवन को अपनाते चले गये। महर्षि दयानंद सरस्वती के सपनों के संसार-निर्माण के लिए निर्बाध अपनी आहुति देते चले आ रहे हैं। जो विद्यार्थी काल में पिता से प्राप्त जेब-खर्च को लेकर आर्य समाज का काम करते रहे वही आज अपनी कमाई का अतुल धन आर्य समाज के विभिन्न कार्यक्रमों में आहुति देकर संतुष्ट होते हैं।

उनके जीवन में आर्य समाज की उत्कृष्ट विचारधारा बेहद उज्ज्वल रूप में प्रकट हुई है। एक ओर जहाँ वे आर्य सिद्धान्त के प्रति कटिबद्ध तथा संकल्पित हैं वहीं दूसरी ओर हरेक समाज के लिए उनका मुखर जीवन तथा बहुमूल्य योगदान, प्रेम तथा सामन्जस्य से भरा हुआ देख धन्यता का बोध कराता है। मानो आर्य समाज की संजीवनी को समेटे इस दिव्य पुरुष नेमहावटवृक्ष का रूप धारण कर लिया है जिसकी छाया में कोई भी विश्राम तथा आराम पाता है। तभी तो लोग कहते हैं कि आर्यरत्न आराम तथा मुस्कुराहट को ही बिखेरने के लिए पैदा हुए हैं।

इस विराट् व्यक्तित्व को नमन करते हुए ईश्वर से प्रार्थना कि ये सदैव प्रसन्नता के फूल बिखेरते रहें और हम लोग उस फूल की सुगंध तथा महक से अलंकृत होते रहें।

(कहानी)

सार्थक सहयोग

(सार-सहानुभूति)

- श्री एम॰ सी॰ शर्मा भट्ट

पवन एक्सप्रेस पवन की तेज गति के समान पश्चिम दिशा की ओर चली जा रही थी। अब संध्या होने लगी थी। शयनयान श्रेणी का डिब्बा था। यात्रियों की साधारण भीड़ थी। बाहर से पवन के सुखद झोंके यात्रियों के मन को पुलकित कर रहे थे। कुछ यात्रीगण परस्पर वार्त्तालाप में व्यस्त थे तो कुछ यात्री समाचार-पत्र एवम् पत्रिकायें पढ़ने में व्यस्त थे। उसी डिब्बे में एक तरफ खिड़की के निकट एक वृद्ध सज्जन गाड़ी की चलने की दिशा की ओर मुँह करके बैठे थे। वे गम्भीर सोच में डूबे हुए थे। किसी से कुछ बातचीत नहीं कर रहे थे। अब संध्या हो चुकी थी। वृद्ध सज्जन के ठीक सामने लगभग उन्हीं के वय के एक सज्जन बैठे थे। दोनों सज्जन आमने-सामने थे, इस सज्जन ने सोच में डूबे सज्जन से पूछा " आप चुपचाप बैठे हैं, कुछ बोल नहीं रहे हैं। कुछ सोच में डूबे हैं। क्या बात है? क्या कोई गम्भीर समस्या है? उन्होंने उत्तर दिया, जीवन तो सदा समस्याओं से घिरा ही होता है, लेकिन कभी कोई गम्भीर समस्या आदमी को गम्भीर सोच में डूबने के लिए विवश कर देती है। उसकी वाणी बन्द हो जाती है और वह चुप हो जाता है। यही दशा मेरी है।" प्रश्नकर्त्ता ने फिर पूछा "क्या मैं आपका शुभनाम जान सकता हूँ?" चिन्तित सज्जन ने उत्तर दिया " श्रीमान् मेरा नाम कुमार है, लोग मुझे कुमार बाबू कहते हैं।" कुमार बाबू ने उनसे प्रश्न किया "आपका शुभनाम क्या है, श्रीमान्? " मुझे लोग दया बाबू कहते हैं, दूसरे ने उत्तर दिया।" कुमार बाबू समस्या ग्रसित थे, दया बाबू समस्या रहित थे। दया बाबू ने कहा " समस्या का निदान तो समाधान है लेकिन समाधान तो कठिन होता है।" कुमार बाबू ने उत्तर दिया "मैं इसी कठिनाई में फंसा हुआ व्यक्ति हूँ। दया बाबू कुमार बाबू की बातें सुनकर गम्भीर हो गये। इसी बीच रेल खान-पान सेवा का एक वेन्डर चाय लेकर पहुँच गया। दया बाबू ने उससे दो प्याली चाय देने को कहा। वेन्डर ने शीघ्र ही गर्म चाय की पहली प्याली दया बाबू को पकड़ायी, दया बाबू ने उस चाय की प्याली को विनम्रता पूर्वक कुमार बाबू की ओर बढ़ाते हुए उसे स्वीकार करने के लिए उनसे याचना की। कुमार बाबू ने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। दया बाबू ने दूसरी प्याली स्वयं ली। दोनों सज्जन चाय पीने लगे।

पवन एक्सप्रेस अब बिहार राज्य और सरयू नदी को पार कर उत्तर प्रदेश राज्य की सीमा में प्रवेश कर चुकी थी। अब पूर्ण संध्या हो चुकी थी। दया बाबू ने

कुमार बाबू से पूछा ''कुमार बाबू, आपकी यात्रा कहाँ तक की है? कुमार बाबू ने उत्तर दिया। ''श्रीमान्, मैं क्या बताऊँ! मुझे स्वयं नहीं मालूम कि मेरी यात्रा कहाँ की है? और मैं कहाँ जा रहा हूँ! फिर भी अभी मैं वाराणसी जा रहा हूँ। दया बाबू को पहले ही आभास हो चुका था कि यह व्यक्ति अपनी समस्या से अधिक दुखी है। दया बाबू ने बड़ी विनम्रता पूर्वक कुमार बाबू से पूछा, ''कुमार बाबू, आप मुझे क्षमा करें, अगर आपको बुरा न लगे तो क्या मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?'' कुमार बाबू ने उत्तर दिया ''हाँ, हाँ, आप अवश्य पूछिये, दया बाबू ने प्रश्न किया '' क्या मैं आपकी समस्या जान सकता हूँ?'' एक मस्तिष्क से दो मस्तिष्क हमेशा अच्छा होता है। हो सकता है कि मैं आपको कोई सलाह दे सकूं। कुमार बाबू की मनःस्थिति अब तक अपनी सोच और चिन्ता से हट चुकी थी। वे अब स्वयं में कुछ स्फूर्ति अनुभव कर रहे थे।

अब दया बाबू से उन्होंने अपनी बात कहनी शुरू कर दी। दया बाबू, मेरी समस्या है मेरी कन्या का विवाह-संस्कार! आज तक मेरी बेटी के विवाह-सम्बन्ध के किये कहीं कुछ निश्चित न हो सका है। मैं जगह-जगह भटक रहा हूँ। अपने पूरे क्षेत्र में भटक-भटक कर थक गया हूँ। अभी तक कहीं कोई आशा की किरण नहीं दिखाई दे रही है। यही मेरी समस्या है और यह गम्भीर चिन्ता का विषय है। मैं मन में आशा लिए इधर-उधर घूम रहा हूँ। मुझे स्वयं ये मालूम नहीं है कि मुझे कहाँ जाना है और मेरी मंजिल कहाँ है? मेरे पास एक बड़ा सफेद लिफाफा है जो कोरा है उस पर कहीं का कोई पता नहीं लिखा है। लिफाफे में मेरी बेटी का व्यक्तिगत विवरण-पत्र, जन्म-कुण्डली और उसका चित्र है। ये लिफाफा मैं कहाँ लेकर जाऊँ? कौन इसका प्राप्तकर्त्ता है? ये मुझे मालूम नहीं है, ये सब कहते-कहते कुमार बाबू भावुक हो उठे और उनकी आवाज भर्रा गयी। दया बाबू शीघ्र ही पूरी वस्तु स्थिति को समझ गये। उन्होंने शीघ्र ही वो कोरा लिफाफा कुमार बाबू से माँग लिया। अब तक पवन एक्सप्रेस बलिया जंक्शन के निकट थी। दया बाबू ने लिफाफा खोला और उसमें रखे सभी कागज और चित्र को बारी-बारी से पढ़ा और देखा। लिफाफे के भीतर के पत्र और चित्र को देखकर प्रसन्न हो उठे और मुस्कराने लगे। कुमार बाबू ने उत्सुक होकर प्रश्न किया, ''दया बाबू, क्या बात है कि आप मुस्कुरा रहे हैं? दया बाबू हँसने लगे और हँसते-हँसते बोले, ''कुमार बाबू इस लिफाफे का प्राप्तकर्त्ता मिल गया।'' दया बाबू ने अपनी जेब से कलम निकाल कर उस कोरे लिफाफे पर पता लिख डाला। यह पता स्वयं दया बाबू का था। दया बाबू ने पता लिखे लिफाफे को कुमार बाबू को पकड़ा दिया। अब लिफाफा कोरा नहीं था। उस पर एक निश्चित पता लिखा था। पवन एक्सप्रेस अब बलिया रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नं॰ 1 पर आकर रुकी, पूरा स्टेशन प्रकाशमय हो रहा था। लिफाफा कुमार बाबू के हाथ में था, उन्होंने लिफाफे पर लिखे पते को पूर्ण प्रकाश में भलीभाँति पढ़ लिया, लिफाफे पर लिखा था :

एक्स मास्टर वारन्ट अफसर दया वर्मा,
आवास- विकास कॉलोनी, झूंसी,

इलाहाबाद।

कुमार बाबू के मन में खुशी की एक लहर दौड़ गयी। वे आशावान हो गये। उन्होंने विस्मय-भरे शब्दों में कहा ''श्रीमान् ये तो आपका ही पता जान पड़ता है।'' दया बाबू ने उत्तर दिया ''हाँ, श्रीमान् ये मेरा ही पता है।'' कुमार बाबू ने प्रश्न किया, ''श्रीमान्, आपकी यात्रा कहाँ तक की है? दया बाबू ने उत्तर दिया ''मैं अपने निवास स्थान इलाहाबाद जा रहा हूँ।'' कुमार बाबू ने दया बाबू से कहा ''यहीं हमलोग कुछ भोजन-सामग्री ले लें, आगे कुछ मिले या न मिले'' दया बाबू ने कहा '' मैं भी तो ऐसा ही सोचता हूँ।'' कुमार बाबू ट्रेन से उतरते हुए दया बाबू से बोले ''आप सामान देखते रहिए, मैं जल्द ही आया।'' सामने ही प्लेटफार्म पर हलवाई की बड़ी दूकान थी। उन्होंने गर्म ताजी पूड़ियाँ, सब्जी, अचार और वहाँ की प्रचलित इमरती मिठाई ले ली, सब कुछ ठीक से लेकर शीघ्र ही वापस आ गये। इनके आते ही दया बाबू ने अपना थरमश उठाया और पानी लेने चले गये और जल्द ही पानी लेकर वापस आ गये। पवन एक्सप्रेस बलिया से चल पड़ी। दोनों अपरिचित रेलयात्रियों ने भावनात्मक एकता में बँधकर एक साथ ही भोजन किया। मानव-मन में प्रेम एक ऐसा भाव है जो सब कुछ करने के लिए प्रेरित कर देता है। ये दोनों सज्जन अब मित्र जैसे हो गये।

भोजनोपरान्त कुमार बाबू ने दया बाबू से पूछा, श्रीमान्, कृपया आप अपना पारिवारिक परिचय दीजिये। दया बाबू ने अपना परिचय दिया। ''मैं वायु सेना का एक अवकाश प्राप्त मास्टर वारन्ट अफसर हूँ। मेरा अपना निवास इलाहाबाद में इसी पते पर है। मैं सपरिवार इसी पते पर रहता हूँ। मेरे दो पुत्र हैं। मेरा बड़ा पुत्र मनोहर इलाहाबाद में ही एक इन्टर कॉलेज में प्राध्यापक है जो एम०एस०सी०, बी-एड० है, मेरा दूसरा पुत्र रेल विभाग में जूनियर इंजिनियर है, मेरी पत्नी राजकीय विद्यालय की अब अवकाश प्राप्त शिक्षिका है। आपका मेरे यहाँ हार्दिक स्वागत है। आप मेरे यहाँ आइये, सबसे मिलिये, एक दूसरे को जानिये-समझिये, फिर ईश्वर के इच्छानुसार ही जो होना होगा, वो होगा। मनुष्य कर्त्ता है, कराने वाला ईश्वर है। वैसे भी विवाह-सम्बन्ध तो पहले से ही ईश्वर के यहाँ सुनिश्चित होता है। मनुष्य ये नहीं जानता और अनजाने में सब जगह भटकता फिरता है। सब की यही गति है।'' कुमार बाबू ने दया बाबू की पूरी बातों को ध्यानपूर्वक सुना और संतोष अनुभव किया।

कुमार बाबू ने आगे कहा ''मैं मन में आशा लिए बाबा विश्वनाथ की शरण में काशी नगरी जा रहा हूँ। इस आशा के साथ कि वहाँ कहीं कोई विचारवान सहृदय एवम् सहानुभूतिपूर्ण सज्जन मिल जाय जो मेरी समस्या पर विचार कर सकें।'' लेकिन भोले शंकर की दया-दृष्टि हुई और अति सौभाग्यवश आप जैसे सहृदय व्यक्ति मुझे मिल गये। दया बाबू, क्या विवाह सम्बन्ध अब पूर्ण रूप से व्यवसाय बन चुका है? इस सभ्य मानव-समाज में विवाह सम्बन्ध तो एक अति आवश्यक संस्कार है जिसपर यह सृष्टि गतिमान है। इस सम्बन्ध में नर-नारी मनोवैज्ञानिक रूप से, प्राकृतिक रूप से,

धार्मिक रूप से और सामाजिक रूप से एक-दूसरे से मिलकर जीवन भर के लिए सच्चे जीवन साथी बन जाते हैं। एक-दूसरे के लिये मन एवम् आत्मा से समर्पित हो जाते हैं। फिर इसमें व्यवसाय क्यों? लेकिन जहाँ विवाह सम्बन्ध व्यवसाय की दृष्टि से देखा जायेगा वहाँ ये सभी व्यक्तित्व सम्बन्धी गुण दुर्लभ एवम् अप्राप्य हो जायेंगे। फिर युवक-युवती का जीवन सुख-शान्ति पूर्ण न होकर क्लेशमय एवम् दुखदायी बन जायेगा। इसका दोषी कौन होगा? इस तरह का अन्याय उस युवक-युवती के साथ क्यों? उस व्यवसाय द्वारा उनके जीवन के सुख-शान्ति और प्रेम को कलुषित क्यों किया जाय? विवाह-सम्बन्ध व्यवसाय-सम्बन्ध नहीं है, विवाह-सम्बन्ध विश्वास, कर्त्तव्य, सहयोग, उत्तरदायित्व, सहानुभूति, त्याग, धर्म तथा अध्यात्म की वृहत् परिधि में घिर कर प्रेम-सूत्र में बँधता है। विवाह-सम्बन्ध में बँध कर नर-नारी को स्वयम् पारिवारिक जीवन में स्थापित करना होता है। इस पवित्र बन्धन में व्यवसाय की मनोवृति कहाँ से? यह एक धार्मिक अनुष्ठान है। इस मंगलमय कार्य के लिये शुभकामना, हर्ष, उल्लास तथा करुणा के लिए स्थान है न कि कटुता, वैर, ईर्ष्या, दुर्व्यहार और अपसंस्कृति के लिये स्थान है। सामाजिक परिवर्त्तन स्वाभाविक है लेकिन साथ-साथ सामाजिक नियंत्रण भी नितान्त आवश्यक है अन्यथा समाज विकृत हो जायेगा। उपयुक्त युवक-युवती की उच्च शिक्षा के लिए व्यय दोनों पक्षों की ओर से होता है न कि एक ही पक्ष की ओर से । दोनों पक्ष मिलकर पूजा करते हैं, यज्ञ करते हैं और विवाहोत्सव मनाते हैं। दोनों पक्ष इसमें सत्य रूप से समान सहभागी हो न कि स्वार्थी एवम् लोभी व्यवसायी बने। धन एक साधन है, आदर्श नहीं। जीवन स्वयम् व्यवसाय नहीं है। जीवन को व्यवसाय बनाकर इसे कठिन ही नहीं बल्कि दूषित, विकृत और असम्भव नहीं होने देना चाहिये। जीवन को सरल, सुचारू एवम् स्वाभाविक रूप से संचालित करना मानव बुद्धि की पराकाष्ठा है।

दया बाबू कुमार बाबू की पूरी बातें सुनकर उनसे बोले "आप ने जो कुछ भी कहा वो पूर्णतः सत्य है और मैं आपके विचारों से पूर्णतः सहमत हूँ। इस संसार में अनेक विवाह योग्य युवक एवम् युवतियाँ हैं। उनके विवाह सम्बन्ध में बँधने से पहले उनकी उपयुक्तता अति आवश्यक है, उनकी शिक्षा, उनकी आयु, चरित्र, विचार, विवेक, संस्कार, विनम्रता, शालीनता, आर्थिक क्रिया तक रूप-रंग देखना पड़ता है फिर इसकी साम्यता दोनों में हो तो अति उत्तम बात है जिससे उनका जीवन सुख-शान्ति पूर्वक व्यतीत हो।"

पवन एक्सप्रेस अपनी उसी गति से चली जा रही थी। अब ये दोनों यात्री अपने शयन पर लेट गये और लेटे-लेटे वार्त्ता जारी रखी। कुमार बाबू के साथ के लिफाफे के सभी पत्र एवम् विवरण तथा चित्र को देख कर दया बाबू सन्तुष्ट थे। दया बाबू द्वारा अपने स्वयं के पारिवारिक परिचय से कुमार बाबू को पूर्ण संतोष था।

कुमार बाबू एक अवकाश प्राप्त शिक्षक थे, वे अपने यहाँ माध्यमिक विद्यालय में पूर्व प्रधानाध्यापक थे। उनकी धर्मपत्नी एक धर्मभीरू गृहिणी थी।

ईश्वर के पूजा-पाठ एवम् भक्ति-भाव में अधिक व्यस्त रहती थी।इनकी दो सन्तानें थीं। एक पुत्र तथा एक पुत्री। उनके पुत्र सरकारी सेवा में थे, उनकी पुत्री रंजना हिन्दी में एम०ए० कर चुकी थी, साथ में उसने बी-एड० की भी पढ़ाई पूरी कर ली थी। वर्त्तमान समय में अस्थाई रूप से स्थानीय केन्द्रीय विद्यालय में शिक्षिका थी। हिन्दी साहित्य के किसी विषय पर डाक्टरेट करने में लगी थी। रंजना रंग-रूप, विचार एवम् व्यक्तित्व में बहुत अच्छी थी। शिक्षक पिता एवम् धार्मिक माता के संस्कार से वह परिपूर्ण थी।

कुमार बाबू ने दया बाबू से कहा ''श्रीमान्, मेरे अपने छोटे भाई वाराणसी में ही कार्यरत हैं और वहीं सपरिवार हैं, मैं उन्हीं के पास वाराणसी जा रहा था। उनसे अपनी कन्या के विवाह के लिये आगे सोच-विचार करने के लिये। अब मैं वाराणसी भाई के पास तो जाऊँगा साथ ही बाबा विश्वनाथ का दर्शन भी करूँगा। भाई को आपका पूरा परिचय दूँगा। आपके सहानुभूतिपूर्ण शब्दों से भाई को अवगत कराऊँगा। फिर भाई के साथ मैं आपके निवास पर शीघ्र आ जाऊँगा। दया बाबू ने कहा ''स्वागत है, श्रीमान्, आप मेरे यहाँ अवश्य आयें, हमलोगों का और परिचय बढ़े, एक-दूसरे के और निकट आ जायें। आगे सब कुछ ठीक और अच्छा लगे तो आगे की बातें होंगी और ईश्वर की इच्छा हुई तो विवाह-सम्बन्ध होगा।'' दया बाबू कुछ और कहना चाहते थे, लेकिन कुमार बाबू बीच में ही बोल पड़े ''आप पर मुझे पूर्ण आस्था है। अब मैं अपने गन्तव्य पर पहुँच चुका हूँ। अब आगे ईश्वर के हाथ में है।'' दया बाबू ने कहा ''मैं एक सेवा निवृत्त वायु सैनिक हूँ। अबतक मैंने लम्बी अवधि तक देश-सेवा की है, अब मैं समाज-सेवा करता हूँ। आपके साथ मेरी यह भेंट और आपकी समस्या उसी समाज-सेवा में सम्मिलित है।'' कुमार बाबू ने दया बाबू को बहुत धन्यवाद दिया और कहा ''श्रीमान्, मैं परसों अपने भाई के साथ आपके निवास पर पहुँच जाऊँगा।''

पवन एक्सप्रेस अब वाराणसी जंक्शन पहुँचने वाली थी। थोड़ी देर में गाड़ी प्लेटफार्म पर आ पहुँची, कुमार बाबू ने अपना सामान सम्भाला और दया बाबू से अनुनय पूर्वक कहने लगे, ''मैं पूर्ण रूप से आप पर अवलम्बित हूँ।'' दया बाबू ने कहा ''कुमार बाबू, मैं आपका सार्थक सहयोग करूँगा। अब आप चिन्ता रहित अपने भाई के पास जाइये।'' दया बाबू ने दोनों हाथों से कुमार बाबू के दोनों हाथ पकड़े, लेकिन कुमार बाबू ने दया बाबू का आलिंगन करते हुए 'दयानिधान' कह कर विदा लिया। पवन एक्सप्रेस कुमार बाबू को प्लेटफार्म पर छोड़कर आगे बढ़ गई। कुमार बाबू प्रतीक्षालय की ओर चल पड़े। रात अभी बाकी थी। सबेरे की प्रतीक्षा करने लगे और पवन-एक्सप्रेस की अपनी सफल यात्रा के बारे में सोचने लगे।

पौ फटा, सबेरा हुआ, भगवान भास्कर का दर्शन हुआ, कुमार बाबू स्टेशन से बाहर आ गये, रिक्शा पकड़े और अपने भाई के निवास पर पहुँच गये। अपने भाई और बच्चों से मिले फिर शीघ्र ही गंगा-तट की ओर चल पड़े, गंगा-स्नान के निमित्त। स्नान के उपरान्त बाबा विश्वनाथ के मन्दिर आ गये। वहाँ भोलेशंकर को पुष्प, प्रसाद एवम् गंगा-जल अपर्ण किये। वहीं मन्दिर में बैठकर भगवान की भक्ति-भावना में

लीन रहे, एक घंटे के बाद पुनः भगवान के सामने नत-मस्तक होकर मन्दिर से बाहर आ गये। मुख्य सड़क पर आकर उन्होंने रिक्शा से अपने भाई के निवास पर आ गये। भगवान का प्रसाद पूरे परिवार को दिया, फिर भोजन करके विश्राम किया। पिछली रात पवन एक्सप्रेस में जागते बीता था। इनके छोटे भाई शाम को जल्दी ही घर आ गये। कुमार बाबू ने अपने छोटे भाई को पूर्ण रूप से सभी कुछ बता दिया। छोटे भाई सबकुछ सुनकर प्रसन्न हुए। अगले दिन दोनों भाइयों ने इलाहाबाद जाने का कार्यक्रम बना लिया। अगले दिन वे प्रातःकाल उठकर और शीघ्र तैयार होकर इलाहाबाद के लिये प्रस्थान कर गये। दया बाबू के निवास पर दोनों भाई दोपहर से पहले पहुँच गये। दया बाबू ने दोनों भाइयों की प्रसन्नता पूर्वक अगवानी की। दोनों परिवार आपस में मिले। एक-दूसरे से परिचित हुए। एक-दूसरे को भली-भाँति जाना-पहचाना। दया बाबू के सुपुत्र मनोहर को दोनों भाइयों ने देखा, बहुत प्रसन्न हुए। मनोहर सचमुच मन को हरने वाले थे। कुमार बाबू की सुपुत्री रंजना के फोटो को देखकर और उसके वैयक्तिक विवरण एवम् जन्मपत्री को देखकर एवम् पढ़कर दयाबाबू के परिवार को अति प्रसन्नता हुई। रंजना सचमुच मन को रंजित करने वाली थी। दोनों परिवारों ने अपनी-अपनी स्वीकृति सहर्ष एक दूसरे को बतायी। दोनों परिवारों ने मिलकर विवाह-सम्बन्ध निश्चित कर लिया। आनेवाली बुद्ध पूर्णिमा के दिन विवाह-संस्कार का शुभ-दिन निश्चित हुआ। अभी एक माह का समय बाकी था। विदा लेने से पूर्व कुमार बाबू ने विनती-भरे शब्दों में दया बाबू से पूछा ''श्रीमान्, मैं इस विवाह-सम्बन्ध में आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?'' दया बाबू ने कहा ''आपका प्रेम और ये मधुर सम्बन्ध बना रहे, यही बड़ी सेवा होगी।'' कुमार बाबू ने अपने भावी समधी - दया बाबू से एक अनुनय किया, उन्होंने कहा ''समधी साहब, मेरी बड़ी लालसा है कि मैं अपनी कन्या रंजना को एक वधू के रूप में देखने से पहले वधू को पूर्ण परिधान एवम् आभूषण की सम्पूर्ण व्यवस्था मैं स्वयं करूँ जिससे मेरी लालसा पूरी हो। कुमार बाबू ने फिर याचना पूर्वक कहा '' कृपया आप मेरी ये लालसा पूरी करने के लिये मेरी ये विनती अवश्य स्वीकार कर लें। दया बाबू नहीं चाहते हुए भी मौन हो गये यह जानकर कि पिता की बड़ी लालसा है अपनी कन्या के प्रति। इस मौन स्वीकृति से कुमार बाबू को बहुत संतोष हुआ कि वे अपनी आत्मजा को ये एक छोटा सा उपहार इच्छानुसार दे रहे हैं।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन बड़े हर्षोल्लास के साथ मनोहर एवम् रंजना का विवाह-संस्कार सम्पन्न हुआ। पवन एक्सप्रेस के दो सहयात्री - एक सेवानिवृत्त शिक्षक एवम् एक भूतपूर्व वायु सैनिक अब समधी के रूप में प्रेमपाश में बँधे हुए थे।

''सहयोग परस्पर जीवन संचालन का एक सूत्र है।''

भारतीय स्टेट बैंक

हर मोड़ पर आपके साथ

सिर्फ बैंकिंग. और कुछ नहीं

हमारी योजनायें : सफलताएँ

जमा

- सेविंग्स बैंक प्लस
- वरिष्ठ नागरिक जमा योजना
- एस॰ बी॰ आई विशेष
- एस॰ एम॰ ई॰ पावर गेन एवं पावर प्लस
- नो फ्रील खाता

ऋण -

- पेंशन ऋण, जय जवान पेंशन
- रिवर्स मोर्टगेज ऋण
- गृह ऋण, कार ऋण, दुपहिया ऋण, भाग्य रेखा ऋण (गृहिणियों के लिए)
- एक्सप्रेस क्रेडिट (पर्सनल लोन)
- परिसम्पति के एवज में ऋण
- एस. एम. ई. क्रेडिट कार्ड
- एस.एम.ई. क्रेडिट प्लस
- डॉक्टर प्लस
- रेंट प्लस
- टीचर्स प्लस

तकनीकी सुविधाएँ

- इन्टरनेट बैंकिंग
- मोबाइल बैंकिंग
- आर. टी. जी. एस
- एन. इ. एफ. टी.

अधिक जानकारी के लिए अपनी नजदीकी शाखा से सम्पर्क करें।

R.N. 1-3954/81 Reg. Postal No. Muz-7

स्वागतम्

मंगलमय आलोक में

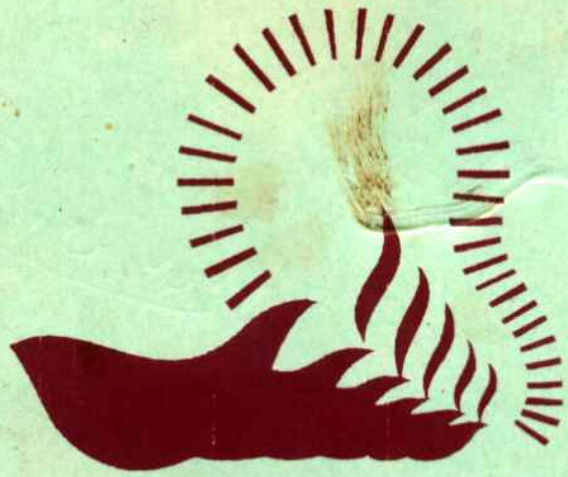

गन्धद्वारां दुराधर्षां
नित्यपुष्टां करीषिणीम्
ईश्वरीं सर्वभूतानां
तामिहोपह्वये श्रियम् ।

गोवर्धन राम अवधेश प्रसाद ज्वेलर्स

महावीर मंदिर चौक, पुरानी बाजार
मुजफ्फरपुर (बिहार)

प्रो०– संजीव गुप्ता

★★★★★★★★★★★★★

सहयोग राशि :-

संरक्षक	: 1000/-रु.
परिवार	: 200/-रु.
प्रस्तुत अंक	: 25/- रु.

★★★★★★★★★★★★★

★★★★★★★★★★★★★

पता :-
निराला निकेतन
बेला कार्यालय
आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री-पथ
मुजफ्फरपुर-842 001 (बिहार)
दूरभाष : 0621-2286466

★★★★★★★★★★★★★

मुद्रक: कुमार प्रिंटर्स, कल्याणी, मुज़फ्फरपुर, 2241654.